बुद्धिमान हनुमान ने निश्चय किया कि इसी वृक्ष पर बैठे-बैठे मैं सीता को धीरे-धीरे मीठी वाणी में राम के गुण तथा उनका संदेश गा-गाकर सुनाऊंगा ताकि उन्हें मुझ पर विश्वास हो जाये।

इस प्रकार सारी नीति निर्धारित कर अंततः हनुमान ने राम की गाथा गाना प्रारंभ किया। प्रारंभ उन्होंने राजा दशरथ से किया और राम के वनगमन तथा रावण द्वारा सीता के अपहरण से लेकर अपने यहां तक पहुंचने की सारी कथा फूलों से माला बनाने की भांति कही (वही, सर्ग 34)।

मिथलेशनंदिनी के लिये ये वचन रोमहर्षित करने वाले तो थे, किंतु अतीव विस्मयकारी थे। भला यहां कौन है जो इस वाणी में उन्हें रामकथा सुना रहा है? यहां-वहां दृष्टि दौड़ाने पर अंततः उन्हें अशोकवृक्ष की डाल में छिपा एक वानर दिखाई दिया...तत्काल तो उन्हें देखते ही सीता मूर्च्छित हो गईं। कुछ क्षण बाद उस वानर को अपने से कुछ दूर बैठे देख उन्हें सहसा विश्वास ही नहीं हुआ कि वे जागृत हैं अथवा स्वप्न देख रही हैं। किंतु उन्हें तो नींद आती ही नहीं है...अतः यह स्वप्न कैसे हो सकता है? कहीं रात-दिन राम का स्मरण करने के कारण यह मन की भावना तो नहीं है, यह भी वे सोचती हैं, किंतु मनोभाव इतना स्थूल रूप नहीं ले सकता ! यह वानर तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है और मुझसे कुछ कह भी कर रहा है! तब हनुमान उनके और निकट पहुंचे और बातचीत उन्होंने ही प्रारंभ की। पहले तो उन्होंने सीता से उन्हीं का परिचय पूछा और फिर इस तरह रोने का कारण भी पूछा...साथ ही आगे मन की बात भी कह दी कि कहीं आप सीता तो नहीं हैं ?

जनकनंदिनी के लिये ये अत्यंत भावुकता भरे क्षण थे। हनुमान से अपने विषय में उन्होंने कुछ भी नहीं छिपाया। विवाह से लेकर अब तक की सारी कहानी उन्होंने हनुमान को सुना दी किंतु जैसे ही हनुमान यह कहते हुए सीता के कुछ निकट पहुंचे कि मैं राम का दूत हूं और राम ने ही मुझे आपका पता लगाने भेजा है, सीता का मन पुनः आशंका से भर गया कि कहीं यह रावण तो नहीं है जो माया के सहारे कपि बनकर मुझे धोखा देकर मेरे निकट आना चाह रहा है? इसी भयवश उन्होंने हनुमान का प्रणाम भी स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि तुम रावण हो तो याद रखना यह तुम बहुत बुरा कर रहे हो। एक बार जनस्थान में संन्यासी के रूप में तुम मुझे धोखा दे चुके हो किंतु अब मैं तुम्हारी बातों में आने वाली नहीं हूं (वा.रा.सुं.कां.सर्ग 35) । यहां जानकी का तेजस्वीरूप देखते ही बनता है।

बेचारे हनुमान ! जिसकी रक्षा हेतु वे सौ योजन समुद्र पार कर आये हैं वह ही उन्हें भक्षक समझ रही हैं ! सीता की आशंका का समाधान वे कैसे करें, अभी सोच ही रहे थे कि सीता का मन अचानक स्वयं ही बदल गया। वस्तुतः क्षण भर बाद ही सीता को मन में प्रसन्नता की अनुभूति हुई...और उन्होंने हनुमान के रावण होने के विचार को झटक दिया...किंतु उनके मन के द्वन्द्व फिर भी समाप्त नहीं हुए। एक मन ने कहा कि कहीं यह स्वप्न तो नहीं है? दूसरे क्षण वही मन कहता कि ऐसा संभव नहीं है कि क्योंकि स्वप्न में वानर को देखने पर अमंगल होता है जबकि मुझे अभी प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है! (आश्चर्यचूड़ामणि में सीता का हनुमान के प्रति संदेह यह सोचकर भी कम होता है कि यह वानर बहुत मीठी वाणी बोल रहा है जबकि राक्षस कभी मधुर वचन नहीं बोलते। -6.5)

अंततः हनुमान पर विश्वास ठहराने के लिये वैदेही उनसे राम और लक्ष्मण के लक्षण पूछती हैं । इस पर हनुमान अत्यंत विस्तार से राम-लक्ष्मण के शारीरिक चिन्हों का वर्णन करते हैं साथ ही उनके स्वभाव का भी बखान करते हैं। सामान्यतया साहित्य में नारी के रूप का नखशिख वर्णन मिलता है । वाल्मीकि ने यहां राम के बहाने मानों एक पुरुष का सुंदरतम चित्र खींचा है जिसमें एक-एक अंग का विषद वर्णन है। यहां तक कि राम के तलवों की रेखाओं का भी वे वर्णन करते हैं(सुं.कां.सर्ग 35)।

और फिर सीता को पूर्ण विश्वास दिलाने के लिये मारुति राम द्वारा प्रेषित, रामनाम अंकित मुद्रिका उन्हें देते हैं। सीता के लिये यह क्षण अत्यंत रोमांचक पर अतीव शीतलता देने वाला था। तप्त धरती मानो वर्षा की रिमझिम से भींगने लगती है। मुद्रिका का मिलना मानो राम का ही मिलना था। हनुमान पर वे प्रसन्न होती हैं और उनके प्रति सारा संदेह जाते रहता है। राम ने भेजा है तो अवश्य ही यह वानर पराक्रमी और शीलवान हैं। राम की कुशलता का समाचार जहां उनमें प्रसन्नता उत्पन्न करता है वहीं अब तक उनकी ओर से उदासीनता उन्हें व्याकुल भी करती है। राम अब तक चुप क्यों है? शायद यह उनके भाग्य का दोष है कि अभी उनके दुखों के अंत होने का समय नहीं आया है। वे पूछती हैं कि क्या राम मुझे इस संकट से उबारेंगे ...और क्या भातृवत्सल भरत मेरे उद्धार के लिये अपनी सेना भेजेंगे (वही, 36.24) ? इस पर हनुमान बड़े विनीत स्वर में सीता को ढांढस बंधाते हैं...राम शीघ्र ही आपको लेने आएंगे। उन्हें तो अब तक यह ही पता नहीं था कि आप यहां है। मेरे यहां से लौटते ही वे वानरों और भालुओं की सेना साथ लेकर, सागर को अपने बाणों से स्तब्ध कर, लंकेश को विजीत कर आपको ले जाएंगे। राम तो सदा आपकी ही याद करते रहते हैं। आपकी चिंता के कारण उन्हें नींद नहीं आती। कभी आंख लगी तो 'सिया सिया 'कहते हुए उठ जाते हैं। यहां तक कि आपमें चित्त लगे रहने के कारण उन्हें अपने शरीर में बैठे मच्छर आदि कीड़े-मकोड़ों को हटाने की सुध भी नहीं रहती। आपके लिये वे उत्तम व्रत का पालन भी कर रहे हैं। जैसे ज्वालामुखी पर्वत जलती हुई भीषण आग से सदैव तप्त रहता है उसी प्रकार वे विरहाग्नि में जलते रहते हैं। जैसे भूकंप से पर्वत हिल जाता है वैसे ही आपको न देख पाने का शोक राम को विचलित कर रहा है। (वही, 35.45-47)

राम मेरे लिये व्याकुल हैं, मेरी खोजखबर ले रहे हैं, इतना भर सीता के लिये पर्याप्त था किंतु मेरे वियोग में सुधबुध खो रहे हैं, यह समाचार सीता को विचलित करने वाला था। इसीलिये वे हनुमान से कहती हैं- तुम्हारा यह कथन